unit 1 (e)

B. A. II - Sem IV

History C - 8

History of West Asia

ईरान के रजाशाह पहलवी की विदेश नीति

रजाशाह पहलवी एक कुशल सुधारक के साथ ही साथ महान कूटनीतिज्ञ भी था। रजाशाह की विदेश नीति के मुख्यतः निम्नलिखित उद्देश्य थे:

ईरान से वैदेशिक प्रभावों को समाप्त करना तथा यूरोपीय वैदेशिक सम्बन्धों में शांति, तटस्थता और सहयोग की नीति अपनाना।

उसने अपनी वैदेशिक नीति को दो भागों में विभाजित किया — अरबों राज्यों से संबंध तथा यूरोपीयन देशों से संबंध।

ईरान की तुर्की और अफगानिस्तान से दोस्ती थी। तुर्की से कुर्द जाति को लेकर मनमुटाव था। लेकिन 22 अप्रैल 1926 में तुर्की और अफगानिस्तान से ईरान की मित्रता हुई। उसने तुर्की की राजधानी अंकारा जाकर मैत्री संबंधों को नया रूप दिया। 1937 ई० में ईरान, तुर्की, ईराक और अफगानिस्तान के साथ संधि हुई जिसे सदाबाद की संधि कही गई। इस संधि में निर्णय लिया गया कि सदस्य राज्य आक्रमण की स्थिति नीति अपनाएंगे, वैदेशिक नीति के परिचालन में एक दूसरे से परामर्श लेंगे। पारस्परिक सहयोग की भावना कायम रखेंगे।

ईरान का यूरोपीय राज्यों से संबंध

ईरान और रूस -

ईरान को इस बात की गलतफहमी थी कि अजरबैजान और खोरासान में जो विद्रोह हुए हैं उसमें रूस का हाथ है। इसके अलावा रूस ईरान में साम्यवाद का प्रसार करना चाहता है। तेल की रॉयल्टी

को लेकर भी मतभेद थे। रूस का कहना था कि 1921 ई० की संधि की धारा के अनुसार यह तय हुआ था कि ईरान रूस छोड़कर अन्य देश को रॉयल्टी नहीं देगा लेकिन जब ईरान ने ब्रिटेन और अमेरिका को रॉयल्टी देने की घोषणा की तब मतभेद बढ़ गया। 1937 ई० में ईरान ने अमेरिकन ऑयल कंपनी को ईरान के उत्तरी प्रांतों में स्थित तेल कूपों की रॉयल्टी दी। अतः रूस ने मत्स्य उद्योग के सामानों का आयात बंद कर दी तथा सोवियत फौजों ने कैस्पियन सागर के तटवर्ती इलाकों पर कब्जा जमा लिया। ईरान और रूस के बीच 1939 ई० तक तनाव रहे।

ईरान - ब्रिटेन संबंध -

ब्रिटेन ईरान के दोनों के अलावा शासन और सेना में भी हस्तक्षेप करते थे। वे काशकस, बख्तियार, लुर्स व कुर्द की जनता को अपनी ओर मिलाए रखने का प्रयास करते थे।

ब्रिटेन और ईरान के बीच जल्द ही मतभेद उभर गए। ईरान के बहराईन प्रदेश में तेल का प्रचुर भंडार था। इसपर ईरान अपना अधिकार चाहता था लेकिन ब्रिटेन टालमटोल कर रहे थे। 1928 ई० में ब्रिटेन ईरान के रास्ते कुछ वायुयानों को भारत भेजना चाहता था, जिसे ईरान ने रोक दिया। ईरान जर्मनी और रूस के साथ वायु समझौता किया तथा ईराक में ब्रिटिश संरक्षण को मान्यता नहीं दी।

अतः ब्रिटेन ने ईरान के समक्ष उन रकमों की मांग रखी जिसे उसने युद्ध के समय दक्षिणी पर्सियन रायफल्स के निर्माण में लगाया था। इसी

समय तटकर को भी लेकर विवाद उत्पन्न हो गया। लेकिन जल्दी ही दोनों के बीच 16 march 1928 को ऐंग्लो-ईरानियन संधि हो गई। ईरान ने यह स्वीकार किया कि वह ब्रिटिश अधिकारियों व कर्मचारियों की रक्षा करेगा। उसने ब्रिटिश वायुयानों को ईरान के रास्ते भारत भेजने की स्वीकृति दे दी। लेकिन दोनों के बीच तेल की रॉयल्टी लेकर पुनः मतभेद हो गए। समस्या जब गंभीर हो गई तब इसे राष्ट्रसंघ ले जाया गया। राष्ट्रसंघ ने 60 वर्षों के लिए नई रॉयल्टी तय कर दी। इससे ईरान को फायदा हुआ तथा ~~[illegible]~~ यह निर्देश दिया गया कि ईरानियों को पूर्ण कुशलता आ जाने पर ईरानी कंपनी का ईरानीकरण कर दिया जाएगा। ईरान इससे संतुष्ट हो गया।

ईरान - जर्मन संबंध

ईरान का जर्मनी से सौहार्दपूर्ण संबंध रहे। 1937 ई० में बर्लिन एवं तेहरान के बीच वायुसेना सेवा आरंभ हुई तथा 1939 ई० में ट्रांस-ईरानियन रेलवे सेवा आरंभ की गई। जर्मन प्रभाव के कारण ईरान में राष्ट्रीयता की भावना आई।

इस प्रकार रजाशाह ने वैदेशिक नीति का सफलता पूर्वक संचालन किया। अरब प्रदेशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध कायम किया तथा यूरोपीय देशों के साथ शांति, तटस्थता और सहयोग की नीति अपनाया।

———— 00 ————

K. Kumari

DSPMU.